मिशन शिक्षण संवाद

बाल साहित्य सृजन

मार्च 2025

संकलन - मिशन शिक्षण संवाद बाल साहित्य सृजन टीम

01.03.2025

बाल साहित्य सृजन

शनिवार

1

शतरंज

शतरंज सिखाती है,
कभी हार न मानना।
हर मुश्किल में जीतना,
और बहादुरी के साथ जीना।।

काले और सफेद रंग में,
बसा होता है ये संसार।
कभी इसमें होती है जीत,
तो कभी होती है हार।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2

कैरम

कैरम का खेल मन को भाए,
बच्चों को ये खूब ललचाए।
फिर क्या बच्चे, बूढ़े या जवान,
कैरम खेल सभी की जान।।

नौ काली और पीली गोटी,
रानी गोटी एक ही होती।
चार खिलाड़ी धकेले गोटी,
रानी गोटी सबकी चहेती।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर, खजनी

3

लूडो

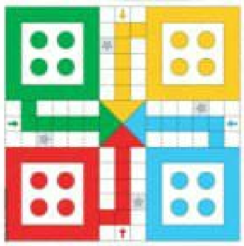

लाल, हरे, पीले, नीले रंग,
की गोटी खेल पांसे के संग।
चार साथी रामू, राजू, रीना,
रीता लूडो खेल रहे हैं संग।।

पांसा फेंका बढ़ी है गोटी,
दो मिलीं तो पिटती गोटी।
छः आने पर खुलती गोटी,
लाल पहले तो जीते गोटी।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

4

साँप-सीढ़ी

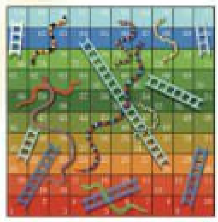

साँप-सीढ़ी का खेल निराला,
सबका मन बहलाने वाला।
सीढ़ी चढ़ते हर्ष मनाते,
साँप मिले तो नीचे आते।।

संख्या गिन-गिन बढ़ते जाते,
जीत की आशा दिल में लाते।
सर्प एक बार डस जाए जब,
तो उतने खाने होते नीचे हम।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

03/03/2025

बाल साहित्य सृजन

सोमवार

1

बन्दर

मानव के पूर्वज कहलाते,
बन्दर मामा कहते सब।
उछलकूद करते रहते,
पेड़ो पर रहते सब।।

तोड़ फलों को खाते है,
मिलकर उधम मचाते है।
Monkey कहते अंग्रेजी में,
वानर संस्कृत में कहलाते हैं।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

2

हाथी

सूँड़ हिलाता आया हाथी,
चलो देखने सब साथी।
बड़े बड़े दो कान हैं इसके,
और सूँड़ है इठलाती।।

चार पैर हैं खंबे जैसे,
चाल बड़ी है मतवाली।
बड़े-बड़े दो दाँत हैं इसके,
देखो कितने बलशाली।।

रचना-
बृजराज सारस्वत(इं०प्र०अ०)
क० वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

3

बिल्ली

मेरी पूसी प्यारी बिल्ली,
दूध मलाई खाती बिल्ली।
म्याऊँ-म्याऊँ वह करती है,
पीछे-पीछे मेरे चलती है।।

घात लगाकर चूहा पकड़ती,
दबे पाँव वह घर में फिरती।
नाम उसका जब भी पुकारे,
गोद में आकर बैठ जाती।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि०- निवाड़ा
बागपत, बागपत

4

हिरन

सबसे तेज भागता है ये,
घोड़े जैसा चलता है।
अजब-गजब का फुर्तीला ये,
दूर पकड़ से रहता है।।

है रोमंथक स्तनधारी,
प्राणियों के समूह का ये।
कान खड़े रहते हमेशा,
रहे सतर्क सदा ही ये।।

रचना-
जुगल किशोर त्रिपाठी (शि०मि०)
प्रा० वि०- बम्हौरी
मऊरानीपुर, झाँसी

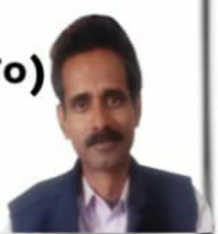

बाल साहित्य सृजन

1

सुबह

सुबह-सवेरे हम उठ जाते,
नयी सुबह सूरज से पाते।
शुरू काम घर-बाहर होते,
बालक, युवा सभी खुश होते।।

चिड़ियों की चहचहाहट सुनते,
बच्चे मन ही मन खुश होते।
मिलकर सब स्कूल को जाते,
ईश्वर को हम शीश नवाते।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

2

सूरज

पूरब दिशा से सूरज उगता,
रोशन जग कर देता।
स्फूर्ति का संचार करता,
आलस को दूर भागता।

सूरज है एक आग का गोला,
आंखों से दिख नहीं पाता।
भानू, दिनकर, रवि, दिवाकर,
भास्कर भी कहलाता।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्राथमिक विद्यालय राजपुर
मथुरा, मथुरा

3

धूप

सूरज से मिलती है धूप,
बदल जाए जग का स्वरूप।
बिना धूप न ऊर्जा आए,
सूनापन सा जग में छाए।।

धूप हमारे तन-मन में,
नव उमंग भर देती।
कार्य को नव ऊर्जा से,
करने का साहस देती।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० जारी भाग 1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

4

छाँव

गर्मी में जब धूप सताती,
छाँव हमें राहत पहुँचाती।
पेड़ो के नीचे छाँव में खेलो,
मम्मी हमको यही बताती।।

छाँव में हमारे पैर न जलते,
बिना चप्पल के जब चलते।
काम करके जब थक जाते,
छाँव में आराम हम पाते।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

06/03/2025

बाल साहित्य सृजन

बुधवार

1

खरगोश की गाजर

मोनू खरगोश ने बोयी गाजर,
थोडे ही दिन मे उग आयी गाजर।
गाजर देखकर मुँह मे आया पानी,
यह देख सबको हुई बहुत हैरानी।।

मोनू रोज खूब गाजर खाता,
अपने दोस्तो को भी खिलाता।
मोनू की गाजरे सबको भाती,
बडे ही चाव से खूब खायी जाती।।

रचना
इला सिंह (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय
पनेरूवा, अमौली, फतेहपुर

2

बंदर का चश्मा

बंदर मामा का चश्मा,
देखने में लगता है अच्छा कितना।
बंदर मामा जब भी पहनते,
पहन कर उसको खूब इतराते।।

एक दिन बंदर मामा ने उसे उतारा,
देख बंदरिया ने उसे लगाया।
बंदर मामा को गुस्सा भी आया,
लेकिन मन ही मन मुस्काया।।

रचना
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना,मेरठ

3

भोलू भालू का शहद

भोलू भालू को शहद प्यारा,
उसने एक देखा छत्ता न्यारा।
झट से पेड़ पर वह चढ़ गया,
छत्ते पर उसने डाला अपना हाथ।।

शहद खाने का उसने किया प्रयास,
मधुमक्खियों को बहुत आया गुस्सा।
डंक मार मार कर भोलू को भगाया,
पर भोलू थोड़ा सा शहद खा पाया।।

रचना
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा,कानपुर देहात

4

पिंकू हाथी का गन्ना

पिंकू हाथी आज है उदास,
ना नहीं है रसीला गन्ना पास।
कालू बंदर ने उसे बुलाया,
खेत चलने का सुझाव बताया।।

कालू और पिंकू ने गन्ना खाया,
हंस खेल कर समय बिताया।
बोले कल चलना गांव पन्ना,
वहां मिलता है रसीला गन्ना।।

रचना
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ०प्रा०वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

बाल साहित्य सृजन

1

हाथी

हाथी राजा चलते धम-धम,
उनके चलने से डर जाते हम।
वो तो खाते इतना सारा और,
हम सब पाते कितना कम।।

एक सूंड है, एक पूँछ है,
और दो कान हैं बड़े-बड़े।
लोगों का मन भी बहलाते,
बोझ उठा लेते खड़े-खड़े।।

रचना-
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा०वि० मुकन्दपुर
लोधा, अलीगढ

2

बिल्ली रानी

मेरी प्यारी बिल्ली रानी,
म्याऊं म्याऊं जब करती है।
चिंकी, पिंकी, मोना, रिंकी को,
वह तो खूब डराती है।।

सफेद हो या भूरी बिल्ली,
सबको खूब पसंद आती है।
लेकिन चूहे राजा को तो,
डरा-डरा कर भगाती है।।

रचना-
शिप्रा सिंह (स० अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

3

हिरन

सोने सा यह पीला है
यह बहुत फुर्तीला है ।
तेज भागे ज्यो हो समीर,
रोमांचक ये धावक वीर ।।

चौकन्ना रहता ये हरदम,
हिरन भरता तेज कदम।
जंगल-जंगल धूमी रमाये,
पर्यावरण की शोभा बढ़ाये।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

4

शेर

जंगल का राजा है शेर,
सबको हुक्म सुनाता है।
इसकी एक दहाड़ से,
हर कोई डर जाता है।।

घास फूस नहीं भाती है,
इसको शिकार भाता है।
रहता है गुफाओं में ये,
जंगल पर हुक्म चलाता है।।

रचना-
ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

बाल साहित्य सृजन

1

मेला

पापा जी मैं मेले में जाऊँगा,
पकौड़ी और जलेबी खाऊँगा।
नीले, पीले, लाल, गुलाबी,
हरे गुब्बारे मैं मेले से लाऊँगा।

मेले में मैं झूले में झूलूँगा,
आसमान को छू लूँगा।
दीदी के लिए सुन्दर माला,
लाना कभी नहीं भूलूँगा।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कमपोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2

हाथी राजा

हाथी राजा हाथी राजा,
सूँड हिलाकर चल रहे।
झूम-झूम के हाथी राजा,
कान हिला कर चल रहे।।

मेरे घर भी आओ आप,
लड्डू पेड़ा खाओ आप।
पीठ पर अपनी सैर कराओ,
दोस्तों संग मस्ती कराओ।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3

गुड़िया की शादी

प्यारी-प्यारी गुड़िया का,
आज मैं ब्याह रचाऊँगी।
हाथों मे उसके सुन्दर,
मेहंदी मैं लगाऊँगी।।

अपनी सारी सखियों को,
दावत पर बुलाऊँगी।
सारे घर को फूलों से,
अब मैं सजाऊँगी।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4

चुहिया की शादी

चूहा-चुहिया की शादी,
चल रहीं खाना आबादी।
पशु-पक्षी सब झूम रहे है,
डी.जे. की धुन पर कूद रहे है।

घूँघट से बोली चुहिया रानी,
मुझको भी दे दो खाना।
फिर चूहे सँग चली जाऊँगी,
सारी जिंदगी साथ निभाना।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

08.03.2025

शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1

बन्दर

बन्दरों की टोली है आयी,
उछले कूदे धूम मचायी।
बन्दर जब भी छत में आते,
कोई शरारत वे कर जाते।।

डाल-डाल पर कूदे बन्दर,
मम्मी आयी घर के अन्दर।
बन्दरों ने उत्पात मचाया,
मम्मी का समान फैलाया।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2

हाथी

काया में है ये भारी,
चाल चले ये मतवाली।
चलता हरदम सूंड हिलाए,
मन बच्चों का है हर्षाए।।

भोजन करता है ज्यादा,
देखने में है सीधा-साधा।
जीव बड़ा होता है हाथी,
सब बच्चे हैं इसके साथी।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर, खजनी

3

बिल्ली

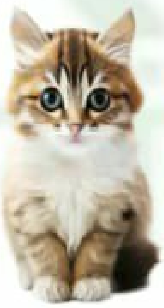

घर के भीतर आये बिल्ली,
चूहे चट कर जाये बिल्ली।
चुपचाप कदम बढ़ाकर आये,
दूध मलाई खाये बिल्ली।।

काले, पीले, भूरे रंग की,
सफेद भी होती बिल्ली।
बाघ की कहलाये मौसी,
बहुत चतुर होती है बिल्ली।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

4

घोड़ा

सरपट-सरपट चलता है,
बहुत तेज़ दौड़ता है।
घर जंगल दोनों में रहता है,
मेहनत बहुत ये करता है।।

कद इसका ऊँचा होता है,
पूँछ लम्बी होती है।
घोड़ा गाड़ी खींचता है,
शुद्ध शाकाहारी होता है।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

10/03/2025

सोमवार

बाल साहित्य सृजन

1

सीटी

सीटी की आवाज आई,
बच्चे ने नजर दौड़ाई।
बन्द किया फिर रोना,
यह तो मस्त खिलौना।।

खिलौने में सीटी करो फिट,
आती है खिलौने में जान।
बच्चों के चप्पल हों या जूते,
होता ढूँढना है आसान।।

रचना-
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० रजवाना
सुल्तानगंज, मैनपुरी

2

गुब्बारा

ऊपर उड़ता जब गुब्बारा,
गैस या हवा से भरा।
बच्चों की उम्मीदों पर,
उतरता है सदा खरा।।

ऊपर उड़ता है जब,
विस्मय से भर देता है।
प्यारी सी खुशी, बच्चों के,
चेहरे पर सजा देता है।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

3

गुड़िया

देखो कितनी सुन्दर गुड़िया,
हो जैसे जादू की पुड़िया।
नाच-नाच कर गाना गाती,
बच्चों के मन को भाती।।

रंग-बिरंगे कपड़े पहने,
देखो कितने सुन्दर गहने।
धीरे-धीरे कमर हिलाती,
सबके मन को बहलाती।।

रचना-
बृजराज सारस्वत(इं०प्र०अ०)
क० वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

4

कार

देखो सुन्दर खिलौना कार,
पहिए होते इसमें चार।
रंग-बिरंगी होती है,
सभी रंगों में मिलती है।।

जब चाबी हम भरते हैं,
तेज दौड़ कर चलती है।
पसन्द बच्चों को आती है,
सबके मन को भाती है।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि०- निवाड़ा
बागपत, बागपत

बाल साहित्य सृजन

1

गर्मी

जाड़ा बीता, गर्मी आयी,
सूरज ने गर्मी फैलायी।
पंखे, कूलर सब को भाते,
गर्मी से राहत पहुँचाते।।

ठण्डी-ठण्डी चीजें भाती,
मम्मी ठण्डी-लस्सी बनाती।
बिन चप्पल न बाहर जाना,
संग में काला-चश्मा लगाना।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

2

छाता

रंग-बिरंगा बड़ा ही प्यारा,
छाता हाथ में लगता है।
हमें बचाए धूप, बारिश से,
कई तरह का होता है।।

बटन दबाकर खोलते इसको,
बड़ा खूब हो जाता है।
छोटी तह में फोल्ड करो तो,
बैग में भी रख जाता है।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

3

आइसक्रीम

तपती धूप जब सताती,
आइसक्रीम की याद है आती।
सर्दी में गायब हो जाती,
गर्मी में फिर देखी जाती।।

बच्चों के मन बहुत है भाती,
रंग-बिरंगी आइसक्रीम होती।
खाते ही ठण्डक कर पहुँचाती,
आइसक्रीम बहुत स्वादिष्ट होती।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्राथमिक विद्यालय राजपुर
मथुरा, मथुरा

4

लस्सी

गर्मी आयी, गर्मी आयी,
दही, छाछ की खुशबू लायी।
अब तो खूब बनेगी लस्सी,
यही सोच खुश हो रही जस्सी।।

ठण्डी-ठण्डी लस्सी में,
डाल मलाई खाऊँगी।
ठण्डी-ठण्डी लस्सी पीकर,
गर्मी दूर भगाऊँगी।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० जारी भाग 1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • मिशन शिक्षण संवाद • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •

12/03/2025 बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

चतुर लोमड़ी

चतुर लोमड़ी बड़ी सयानी,
बनी रहती सबकी नानी।
सब जानवरो को खूब छकाए,
छोटी बातो का बतंगड बनाए।।

सब जानवरो ने योजना बनाई,
जंगल मे सबने दावत बुलाई।
सबने मिलकर पकवान खाए,
लोमड़ी ने सिर्फ खिचड़ी खायी।।

रचना
इला सिंह (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय
पनेरूवा, अमौली, फतेहपुर

2

मिंकू बंदर

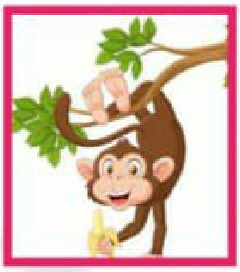

देखो मीकू बंदर आया,
उछल-कूद कर है ठुमकाया।
ऊंची ऊंची ले छलांग,
फल बेचने वाला हुआ हैरान।

फल ठेले से केला उठाया,
जाकर छत पर उसने खाया।
फल वाले को गुस्सा आया,
मिंकू बंदर खी- खी कर मुस्काया।।

रचना
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना,मेरठ

3

शेरू बिल्ला

शेरू बिल्ला बड़ा ही मजेदार,
खाना खाता बहुत जायकेदार।
मौका पाते ही घर मे घुस जाता,
ताजा ताजा दूध चट कर जाता।।

सब बिल्लो पर धाक जमाता,
दूध पीने के सबको उपाय बताता।
शेरू की सब बात भी माना करते,
उसको सब अपना राजा मानते।।

रचना
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा,कानपुर देहात

4

पिंकू हिरन

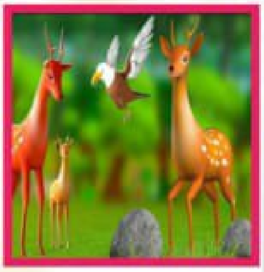

पिंकू हिरन बैग लिए,
कंडक्टर को पैसे दिए।
बोले पहुंचा दो इंडिया गेट,
जरा भी अब करना वेट।।

हाथी, बंदर दौड़ते आये,
शेर फलों की टोकरी लाए।
कंडक्टर ने सीटी बजाई,
ड्राइवर ने झटपट बस चलाई।।

रचना
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ०प्रा०वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

13/03/2025

बाल साहित्य सृजन

गुरुवार

1

होली आई

देखो देखो होली आई,
रंगों की सौगात है लाई।
मट्ठी, मठरी और समोसे,
गुजियों की मिठास है लाई।।

पीकर प्यार की मीठी भंग,
दूर करो सब, दिलों की जंग।
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई,
कर दे सब को रंगारंग।।

रचना-
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा०वि० मुकन्दपुर
लोधा, अलीगढ

2

मेला

रंग-बिरंगा सजा है मेला,
चीनू और गुड़िया के लिए खेला॥
नीले पीले गुब्बारों से,
कितना सुंदर सजा है मेला॥

टिक्की, चाट, बताशों को देख,
देखो सबका मन है डोला।
झूले जोकर को देख के देखो,
बच्चों को सुंदर लगा है मेला॥

रचना-
शिप्रा सिंह (स० अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

3

होली है

नीले, पीले, हरे, गुलाबी
रंग लेकर आई होली ।
फागुन के रंग में रंगी,
गुझिया, पापड़, ठंडाई बोली।।

अबीर, गुलाब उड़ा के खेले होली
गले लगाकर बोले नहीं की बोली।
चुन्नु-मुन्नु पिचकारी लेकर दौड़े,
रंग में रंगी है बच्चों के टोली।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

4

स्कूल

मुझको भाता है स्कूल,
रोज बुलाता है स्कूल।
मैं तो घर भी आ जाऊं,
नहीं कहीं जाता है स्कूल।।

पढ़ना, लिखना, खेलना,
सब सिखलाता है स्कूल।
हंसते, रोते, मस्ती करते,
दोस्तों से मिलवाता है स्कूल।।

रचना-
ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

बाल साहित्य सृजन

1

होली

होली आई , होली आई,
रंगों की बौछारें, संग लाई।
हरे, गुलाबी, पीले, लाल,
गुलाल,अबीर उड़ाने आई।।

आओ! रंगों में रंग जाओ,
प्रेम और सौहार्द बढ़ाओ।
गालों पर मलकर गुलाल,
मीठी गुझिया खूब खाओ।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कमपोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2

पकवान

व्यंजन और पकवान,
बनने की बारी आ रही।
गुझियों की मीठी खुशबू,
अब हर घर से आ रही।।

दोस्तों संग मस्ती करेंगे,
पापड़-चिप्स भी खायेंगे।
रंग-बिरंगी पिचकारी से,
सबको रंग हम लगायेंगे।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3

रंगों की होली

लाल, पीले और हरे रंगों से,
सज गया जग सारा।
ढेरों खुशियाँ लेकर आया,
होली का त्योहार प्यारा।।

गुजिया की खुशबू से,
घर महक रहे हैं सारे।
रंग गुलाल लगाकर,
चेहरे लग रहें हैं प्यारे।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4

मनभावन होली

फाल्गुन पूर्णिमा तिथि,
आ रहे यार-दोस्त, अतिथि।
सँग हो रही हँसी ठिठोली,
आ गयी मनभावन होली।।

ईर्ष्या राग द्वेष गये भूल,
चेहरे खिल रहे जैसे फूल।
लग रहे गले, मीठी है बोली,
आ गयी मनभावन होली।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

बाल साहित्य सृजन

1

होली

होली रंगों का त्यौहार,
गुझिया, मिठाई की है बहार।
लाल, हरा, नीला, पीला,
रंगों की होती बौछार।।

होलिका दहन का है संदेश,
अच्छाई की जीत का उपदेश।
प्रह्लाद की भक्ति अपार,
हिरण्यकश्यप की है हार।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2

पिचकारी

रंग बिरंगी पिचकारी है,
रंगों से इसे भर डारी है।
हाथ लिए बच्चे भागे हैं,
रंगने की तेरी बारी है।।

रंग पर्व और पिचकारी,
उल्लास संग है पिचकारी।
आ जा गुड्डू आ जा राधा,
अब होली में कैसी बाधा।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर, खजनी

3

गुझिया

गुझिया बिन मने न होली,
रंगबिरंगी आयी है होली।
खोया, मैदा, चीनी, मेवा,
घी के संग बनती है गुझिया।।

पापा मम्मी सबको भाये,
खाये बिन रहा न जाये।
मेहमानों को खूब ही भाये,
गुझिया संग पापड भी भाये।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

4

रंग

रंग बिरंगे सपने लेकर,
आया फागुन फिर से घर पर।
लाल गुलाबी, पीला नीला,
खुशियों की बौछार से गीला।।

हरा रंग है नई उमंग का,
नीला गहरा सागर संग का।
पीला देता रोशनी प्यारी,
लाल में है ऊर्जा सारी।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

बाल साहित्य सृजन

1

पेप्पा पिग

पेप्पा पिग उछल-कूद करती है,
अपने दोस्तों संग खेलती है।
खेल-खेल में सीखती बातें,
नित नई शिष्टाचार की बातें।।

छोटा-सा उसका परिवार,
एक साथ मिल-जुलकर रहता।
प्यारा सा भाई जॉर्ज पिग,
मम्मी-पापा संग पिग रहता।।

रचना
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० निवाड़ा
बागपत, बागपत

2

चिड़ियाघर

जानवरों का जहाँ हो प्रदर्शन,
चिड़ियाघर कहलाता है।
जानवरों को संरक्षण के साथ,
प्रजनन भी कराया जाता है।।

चिड़ियाघर में जानवरों के होते बाड़े,
तार, खाइयों से सुरक्षित ये होता है।
पर्यटकों को न हो कोई भी नुकसान,
चिड़ियाघर में प्रबन्ध सख्त होता है।।

रचना
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० रजवाना
सुल्तानगंज, मैनपुरी

3

मोटू-पतलू

मोटू-पतलू की जोड़ी,
है बहुत मजेदार।
रहते है साथ दोनों,
करते प्यारी-सी तकरार।।

मोटू खाने का शौकीन,
पतलू है समझदार।
इन कार्टून चरित्रों को,
मिलता है बच्चों का प्यार।।

रचना
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

4

बिल्ली रानी

बिल्ली रानी कितनी प्यारी,
दूध मलाई खा गई सारी।
म्याऊ- म्याऊँ करती रहती,
झपट शिकार चूहों का करती।।

बड़े ही प्यारे इसके बच्चे,
जैसे प्यारे ऊन के लच्छे।
धमा-चौकड़ी करते हर दम,
बड़े प्यार से खाते चमचम।।

रचना
बृजराज सारस्वत (इं०प्र०अ०)
कम्पोजिट वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

बाल साहित्य सृजन

1

रंगों की होली

रंग भरी प्यारी होली,
आओ खेले संग हमजोली।
हर गली आज मुस्कायी है,
रंग भरी होली आयी है।।

हर तन रंग में सराबोर,
होली है, का मचा है शोर।
सबके जीवन में खुशियों की,
सदा रहे सुनहरी भोर।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० जारी भाग 1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

2

फूलों की होली

आओ! खुशियों को घर लाएँ,
सबको मिलकर गले लगाएँ।
प्रेम से होली सभी मनाते,
फूलों को सब पर बरसाते।।

जिन लोंगों को रंग न भाएँ,
वह लोग पुष्प घर लाएँ।
प्रकृति से फूल घर लाते,
फूल बरसाकर होली मनाते।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

3

लठमार होली

फाल्गुन आते लगता है,
ब्रज में खेलें होली है।
कहीं रंग-गुलाल उड़त है,
फूलों की कहीं होली है।।

कहीं सजी-धजी ब्रजवासिन,
निकलीं डण्डा ले टोली है,
छेडें, मारें दूर भगाएँ,
करतीं बहुत ढिठोली हैं।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

4

लड्डू होली

लट्ठमार होली से पहले,
लड्डू की होली होती।
विश्व प्रसिद्ध लड्डू होली,
बरसाने में है होती।।

ढाल बजाते हुरियारे,
नंदगाँव से आते हैं।
बरसाने की हुरियारिनों संग,
होली खेलते जाते हैं।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्राथमिक विद्यालय राजपुर
मथुरा, मथुरा

• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • मिशन शिक्षण संवाद • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •

19/03/2025 बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

जंगल में दौड़

सब जानवरो ने की चर्चा,
देखे कौन दौड़ मे है अच्छा।
जोर शोर से दौड़ की घोषणा हुई,
दौड़ की तारीख जल्दी नियत हुई।।

पर दौड़ का जब दिन निकट आया,
सबने कोई न कोई बहाना बनाया।
आखिरी दिन चीता हुआ तैय्यार,
सबने किया दौड़ने से इन्कार।।

रचना
इला सिंह (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय
पनेरूवा, अमौली, फतेहपुर

2

जंगल में मंगल

बच्चों संग दूर जा रहे थे,
पैदल-पैदल चल रहे थे।
धूप भी खूब हो रही थी,
चारों ओर धूल भी उड़ रही थी।।

चलते चलते एक पेड़ दिख आया,
हमने वहां पर एक आसन बिछाया।
खाया-पिया कुछ आराम फरमाया,
सबका जंगल में मंगल हो पाया।।

रचना
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना,मेरठ

3

जानवरों की दावत

जानवरों ने मन बनाया,
दावत आज वह करेंगे।
सबने एक दूसरे को बुलाया,
मिलकर सब भोजन बनायेंगे।।

हाथी, खरगोश,शेर सब आये,
अपना-अपना काम सबने किया।
विभिन्न व्यंजन सबने बनाये,
दावत का सबने आनन्द उठाया।।

रचना
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा,कानपुर देहात

4

नाव की सैर

राधा ने योजना बनाई,
सैर पर चले बहन भाई।
परीक्षा के बाद हुई छुट्टी,
ना करना किसी से कुट्टी।।

पिंकू- मिंकू की जोड़ी सुहाती,
सैर कर मस्ती सबको भाती।
पापा बोले बच्चों देर ना करो,
नाव सैर के समान जल्दी भरो।।

रचना
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ०प्रा०वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

बाल साहित्य सृजन

1

तितली रानी

रंग-बिरंगी तितली रानी,
हाथ नहीं तुम आती हो।
जब मैं आऊँ तुम्हें पकड़ने,
झट से तुम उड़ जाती हो।

डाल-डाल पर जाती हो,
बच्चों को तुम भाती हो।
फूलों का रस पी पीकर,
बाग-बाग मण्डराती।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कमपोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2

नन्हीं चींटी

नन्हीं-नन्हीं चीटियाँ,
एक सीध में चलती हैं।
काली-लाल चीटियाँ,
बहुत मेहनत करती है।।

हर घर में ये पायी जाती,
अनुशासन की सीख देती।
जीवन का संघर्ष बताती,
कभी-कभी हमें काट भी लेती।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3

भालू का जन्मदिन

भालू जन्मदिन पार्टी पर,
लाया एक बड़ा सा केक।
हैरान हो गये सारे जानवर,
पार्टी की रौनक देख।।

डीजे के धुन पर सबने,
ठुमके खूब लगाए।
अपनी जन्मदिन पार्टी में,
भालू ने खूब गिफ्ट पाए।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4

जंगल का राजा

जंगल में हुआ सवेरा,
जानवरों ने डाला डेरा।
शेर की जय-जयकार कर,
सिर पर बाँधा, उसके सेहरा।।

शेर ने जंगल का राजा बन,
रखा सब का ख्याल।
सुख-दुःख की हर घड़ी मे,
सब जन्तुओं का जाना हाल।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

22.03.2025 शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1 धरती

धरती माता तुझसे,
हम सबका अद्भुद नाता है।
तू ही भाग्य विधाता है,
हम सबकी तू माता है।।

तेरे आँचल का साया है,
मेरे जीवन का आधार।
ऐसे माँ ही उठा सकती है,
अपने बच्चों का सब भार।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2 चन्दा

चन्दा की छवि है प्यारी,
आकृति भी इसकी न्यारी।
हो जाए कभी अंगुल भर,
कभी एक गोला हो भारी।।

दूर लगे कभी पास–पास,
बच्चों का मामा ये खास।
उजली किरणें देती हैं आस,
छुओ आसमान न हो निराश।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर, खजनी

3 तारे

आसमान में टिम-टिम तारे,
हमको लगते बहुत ही प्यारे।
थपकी दे जब मां सुलाती,
लोरी में तब आते हैं तारे।।

सपनों में दिखते हैं तारे,
हमसे बातें करते तारे।
चन्दा के गांव में रहते,
चमकीले ये टिम-टिम तारे।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

4 सूरज

सूरज हम सबका प्यारा है,
सूरज एक तारा है।
आसमान में चमकता है,
दिन में सबको दिखता है।।

धूप, रोशनी इससे मिलती है,
गर्मी इससे मिलती है।
आठ ग्रहों में है एक,
हम सबके लिए है नेक।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

24/03/2025

बाल साहित्य सृजन

सोमवार

1

हँस कर बोलो

सबसे हँस कर बोलना,
आदत होती है अच्छी।
दुश्मन दोस्त बन जाते,
बात है बिल्कुल सच्ची।।

सभी से मीठा बोलो,
मिश्री सी घुल जाए।
अच्छी आदतें अपनाओ,
जीवन सफल हो जाए।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि०- निवाड़ा
बागपत, बागपत

2

सम्मान करो

बड़ों का सम्मान करना,
यश व कीर्ति बढ़ाता है।
माता-पिता का सम्मान करो,
यह जीवन सँवारता है।।

गुरुजनों को करो प्रणाम,
गुणों का वर्धन होता है।
घर आए का सम्मान करो,
ऐसा व्यक्ति दु:खी न रहता है।।

रचना-
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० रजवाना
सुल्तानगंज, मैनपुरी

3

सच बोलो

जब भी बोलो, सच ही बोलो,
बोलो कभी नहीं झूठ।
जो बच्चें झूठ बोलते,
सब हैं जाते उनसे रूठ।।

जीवन में सच से बड़ा,
नहीं कुछ भी होता।
झूठ को जो अपनाए,
सब कुछ है वह खोता।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

4

जल्दी उठो

सुबह सवेरे जल्दी उठ कर ,
सबको करो प्रणाम।
थोड़ी सी फिर सैर करो,
और करो व्यायाम।।

करके कसरत स्वस्थ बनो,
तुम नित्य करो स्नान।
पूरे दिन में सबसे पहले,
प्रभु का कर लो ध्यान।।

रचना-
बृजराज सारस्वत(इं०प्र०अ०)
क० वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

- आओ हाथ से हाथ मिलाएँ - **मिशन शिक्षण संवाद** - बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ -

25/03/2025

मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1

ब्रज के मेला

ब्रज है बहुत ही अद्भुत,
यहाँ कई दिन का मिला होता।
गौ-चरण मेला, कंस मेला,
दाऊजी का मेला प्रसिद्ध होता।।

रंगनाथ भगवान का मेला,
रथ का मेला कहलाता।
ब्रह्मा कुण्ड का सांझी मेला,
अनुपम बहुत ही होता।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्राथमिक विद्यालय राजपुर
मथुरा, मथुरा

2

राधाअष्टमी

भादों मास शुक्ल पक्ष,
तिथि अष्टमी को आए।
प्राकट्य दिवस श्री राधा का,
पूरा ब्रज मण्डल हर्षाए।।

बरसाने की राधारानी,
वृषभानु पुत्री कहलाए।
कुंज गली में राधे-राधे,
हर मानुष जपता जाए।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० जारी भाग 1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

3

जन्माष्टमी

यह एक प्रमुख त्योहार है,
कृष्ण जन्मोत्सव भी कहलाये।
भादप्रद की अष्टमी के दिन,
जामष्टमी धूम से मनायी जाये।।

कई लोग इस दिन व्रत रखते हैं,
धनियाँ, पंजीरी प्रसाद बनाते हैं।
राधा-कृष्ण जी की पूजा करते,
घर मन्दिर खूब सजाते हैं।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

4

रथ का मेला

होली के बाद तीज से नवमी तक,
ब्रज में रथ का मेला होता।
नवमी को प्राचीन रथ रंगनाथ जी का,
सजकर वृन्दावन में निकलता।।

जड़ाऊ पालकी, सोने के वाहनों पर,
रंगनाथ जी प्रतिदिन दर्शन देते।
नवमी को भक्त रथ के रस्से को,
खींचकर के सौभाग्य समझते।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

आपका दिन शुभ हो..

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण.

शिकायत या सुझाव के लिए व्हाट्सएप्प करें. 94582 78429

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

- आओ हाथ से हाथ मिलाएँ - मिशन शिक्षण संवाद - बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ -
28/03/2025 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1

मेरा छाता

लाल रंग का मेरा छाता,
जो बारिश से मुझे बचाता।
दोस्त के जैसा लगता है,
मुझको मेरा प्यारा छाता।।

जब जब भी मैं उसे उठाता,
मेरा छाता खूब मुस्काता।
जब आती है हवा जोर की,
मेरे हाथ से उड़ उड़ जाता।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कमपोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2

नन्हीं चिड़िया

चीं-चीं की आवाज से,
घर-आँगन गूँज रहा।
छोटे-छोटे तिनको से,
देखो घोंसला बन रहा।।

रंग-बिरंगी प्यारी चिड़िया,
मेरे घर में रहने आयी।
नन्हीं से ये सुन्दर चिड़िया,
दाना चुगने छत पर आयी।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3

तितली

सतरंगी रंगों में रंग कर,
आई है तितली रानी।
पंख है उसकी चमकीले,
मन को भाए तितली रानी।।

फूलों का सारा मीठा रस,
पी जाती तितली रानी।
पकड़ना चाहे कोई उसे,
उड़ जाती तितली रानी।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4

नानी का घर

होती जब स्कूल की छुट्टियाँ,
घूमने जाते नानी के घर।
करते नयी-नयी शरारतें,
ना होता किसी का डर।।

मामा सँग घूमने जाते,
बच्चों को खूब सताते।
खेलकूद और मौज-मस्ती,
खाते-पीते मौज मनाते।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

29.03.2025 शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1

गुलाब

गुलाब को प्रेम, सौंदर्य,
खुशी का प्रतीक माना जाता है।
गुलाब को उसकी मनमोहक,
सुगन्ध के लिए जाना जाता है।।

गुलाब के फूलों में,
औषधीय गुण होते हैं।
गुलाब के फूलों से,
सौंदर्य प्रसाधन बनते हैं।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2

कमल

पंक में निज वास पंकज,
प्रभु चरण विश्वास पंकज।
कांति व्यापित सूर्य रश्मि,
सौंदर्य का उपमान पंकज।।

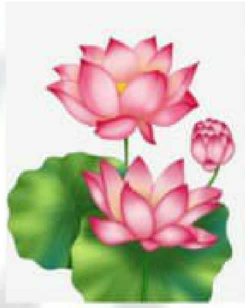

श्री चरण इसका ठिकाना,
पतित पावन जग ने जाना।
जल जड़ों से बंधना जाने,
निर्मल मन से जुड़ना जाने।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर, खजनी

3

गेंदा

बारहमासी गेंदे का फूल,
कई रंग का होता फूल।
मैरीगोल्ड अंग्रेजी में कहते,
भीनी खुशबूवाला फूल।।

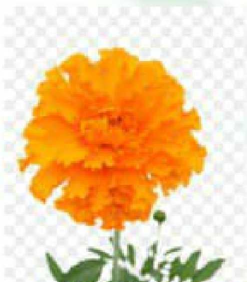

तोरण बनती है गेंदे से,
सजावट होती है गेंदे से।
माला बनती है गेंदें से,
बहुत ही सुन्दर होता फूल।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

4

मोगरा

मोगरा महकाए बगिया सारी,
सुगंध बिखेरे प्यारी-प्यारी।
सफेद रंग की चादर ओढ़े,
शांति, प्रेम का संदेश जोड़ें।।

मंदिर, आँगन, उपवन सजाए,
हर दिल को ये पास बुलाए।
मोगरा कहे बस इतना ही,
खुशबू से हर दिल महकाए।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

सोमवार 31-03-2025

बाल साहित्य सृजन

1

गाय

प्रभु की अदभुत देन है गईया,
सुन लो कान खोलकर भईया।
दूध दही यह हमको देती,
इसको कहते हैं सब मईया।।

प्रभु ने भी है गाय चरायी,
सबको है यह बात बतायी।
यदि गौ सेवा नित्य करोगे,
तो जीवन-भर सुखी रहोगे।।

रचना
बृजराज सारस्वत (इं०प्र०अ०)
कम्पोजिट वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

2

कार्टून चित्र

बच्चों को है बहुत ही भाते,
कार्टून चित्र जब भी आते।
देते नई-नई शिक्षा बच्चों को,
अच्छी-अच्छी बात सिखाते।।

हँसते-हँसाते, खिलखिलाते,
उछल-कूद पल में कर जाते।
सपनों की दुनिया में ले जाते,
कार्टून चित्र टेलीविजन में आते।।

रचना
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० निवाड़ा
बागपत, बागपत

3

चिड़ियाघर का महत्व

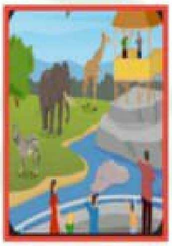

दुनिया नई दिखाते चिड़ियाघर,
वन्य-जीव संरक्षण होता अनुसंधान।
वन्य जीवन को दोबारा है लौटाना,
चिड़ियाघर है मनोरंजन का स्थान।।

वन्य-जीवन प्रकृति का होता वास,
नए-नए जीवों को दिखाया जाता है।
बच्चों को मिलती है बहुत ही खुशी,
जब चिड़ियाघर में घुमाया जाता है।।

रचना
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० रजवाना
सुल्तानगंज, मैनपुरी

4

बालगीत (घोड़ा)

खाता है हरी घास व दाना,
ठुमक -ठुमक कर चलता है।
ठाठ की होती है सवारी,
घोड़ा जिसमें लगता है।।

राजा की होता यह शान,
दूल्हा भी बैठे है इस पर।
पहले तो यह दिखते थे,
हर राह और हर मोड़ पर।।

रचना
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

बाल साहित्य सृजन

रचनाकारों की सूची

1- बृजराज सारस्वत, मथुरा
2- भावना शर्मा, मेरठ
3- जुगल किशोर, झाँसी
4- सीमा शर्मा, बागपत
5- नैमिष शर्मा, मथुरा
6- उमा ठाकुर, मथुरा
7- शहनाज़ बानो, चित्रकूट
8- ज्योति विश्वकर्मा, बाँदा
9- आरती यादव, कानपुर देहात
10- इला सिंह, फतेहपुर
11- नीलम भास्कर, बागपत
12- माला सिंह, मेरठ
13- हेमलता गुप्ता, अलीगढ़
14- वन्दना यादव, जौनपुर
15- शिप्रा सिंह, फतेहपुर
16- ज्योति सागर, बागपत
17- पूनम गुप्ता, अलीगढ़
18- अमित गोयल, बागपत
19- अनुप्रिया यादव, फतेहपुर
20- मृदुला वर्मा, कानपुर देहात
21- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर
22- सुमन पाण्डेय, फतेहपुर
23- सुषमा त्रिपाठी, गोरखपुर
24- रूपी त्रिपाठी, कानपुर देहात

तकनीकी सहयोग

1- नैमिष शर्मा, मथुरा
2- जितेन्द्र कुमार, बागपत

मार्गदर्शन- राजकुमार शर्मा, चित्रकूट

संकलन :- काव्यांजलि दैनिक सृजन टीम